गद्य खण्ड

पाठ—1

युवाओं से

स्वामी विवेकानन्द

I7RU1H

जन्म —12 जनवरी 1863 ई.

मृत्यु — 04 जुलाई 1902 ई.

लेखक परिचय—

आधुनिक युग के द्रष्टा, युवा संन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृति की सुगन्ध विदेशों में बिखेरने वाले साहित्य, दर्शन और इतिहास के विद्वान स्वामी विवेकानन्द का मूल नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। युवावस्था में नरेन्द्रनाथ पाश्चात्य दार्शनिकों के निरीश्वर भौतिकवाद तथा ईश्वर के अस्तित्व में दृढ़ भारतीय विश्वास के कारण गहरे द्वन्द्व से गुजर रहे थे, तभी बंगाल में काली माँ के अनन्य उपासक पूज्य रामकृष्ण परमहंस की दिव्य दृष्टि ने उन्हें ईश्वर की सर्वोच्च अनुभूति का मार्ग प्रशस्त किया। रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र को आत्म दर्शन कराकर विवेकानंद बना दिया।

विवेकानंद बड़े स्वप्न दृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य—मनुष्य में कोई भेद नहीं रहे। उन्होंने वेदान्त की मानवतावादी व्याख्या कर मानववाद का प्रचार किया। स्वामी जी ने अमेरिका के शिकागो में सन् 1893 में आयोजित ''विश्व धर्म महासभा'' में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व कर —

''मेरे अमरीकी भाइयों एवं बहनों !''

सम्बोधन से अपने व्याख्यान को प्रारम्भ कर श्रोताओं का सहज आकर्षण अपनी ओर कर लिया। भारत का अध्यात्म से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन सम्पूर्ण विश्व में विवेकानंद की वक्तृता के कारण ही प्रतिष्ठित हो सका। स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिन 12 जनवरी 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उनके द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन आज भी विवेकानन्द के विचारों को प्रसारित कर रहा है।

मुख्य रचनाएँ— योग, राजयोग, ज्ञानयोग।

पाठ परिचय

संकलित पाठ में स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यान के माध्यम से भारत के नवयुवकों को चरित्र निर्माण की शिक्षा देते हुए उन्हें राष्ट्र के नव निर्माण के लिए प्रेरित किया है । वर्तमान में युवाओं को शारीरिक दृष्टि से मजबूत, निर्भय तथा ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो अपने आप में अपनी शक्ति में विश्वास करते हो । विवेकानन्द की दृष्टि से नास्तिक वह है जो अपने आप में विश्वास नहीं करता । भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा को अपना कर गरीबों, भूखों और पीड़ितों की सेवा में

अपने को अर्पित करना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है। राष्ट्र भक्ति कोरी भावना नहीं है, उसका आधार विवेक और प्रेम है जिसकी अभिव्यक्ति विवेकपूर्ण कार्य करते हुए बाहरी भेदभाव को भूल कर हर एक मनुष्य से प्रेम करने में देखी जा सकती है। विवेकानन्द के उपदेश का ध्येय वाक्य है, 'उठो, जागो और तब तक रूको नहीं, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये। व्याख्यान का अंश होने के कारण यह निबंध 'सम्बोधन' शैली में लिखा गया है।

युवाओं से

मेरी आशा, मेरा विश्वास नवीन पीढ़ी के नवयुवकों पर है । उन्हीं से, मैं अपने कार्यकर्ताओं का निर्माण करूँगा । वे एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र का विस्तार करेंगे – और इस प्रकार हम धीरे–धीरे समग्र भारत में फैल जायेंगे । भारतवर्ष का पुनरूत्थान होगा, पर वह शारीरिक शक्ति से नहीं, वरन् आत्मा की शक्ति द्वारा । वह उत्थान विनाश की ध्वजा लेकर नहीं, वरन् शांति और प्रेम की ध्वजा से ।

भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं– त्याग और सेवा । आप इन धाराओं में तीव्रता उत्पन्न कीजिए और शेष सब अपने आप ठीक हो जायेगा । तुम काम में लग जाओ फिर देखोगे, इतनी शक्ति आयेगी कि तुम उसे संभाल न सकोगे । दूसरों के लिए रत्ती–भर सोचने, काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है । दूसरों के लिए रत्ती–भर सोचने से धीरे–धीरे हृदय में सिंह का सा बल आ जाता है । तुम लोगों से मैं इतना स्नेह करता हूँ, परंतु यदि तुम लोग दूसरों के लिए परिश्रम करते–करते मर भी जाओ, तो भी यह देखकर मुझे प्रसन्नता ही होगी।

केवल वही व्यक्ति सबकी अपेक्षा उत्तम रूप से कार्य करता है, जो पूर्णतया निःस्वार्थ है, जिसे न तो धन की लालसा है, न कीर्ति की और न किसी अन्य वस्तु की ही और मनुष्य जब ऐसा करने में समर्थ हो जायेगा, तो वह भी एक बुद्ध बन जायेगा, उसके भीतर से ऐसी शक्ति प्रकट होगी, जो संसार की अवस्था को सम्पूर्ण रुप से परिवर्तित कर सकती है ।

हमेशा बढ़ते चलो ! मरते दम तक गरीबों और पददलितों के लिए सहानुभूति यही हमारा आदर्श वाक्य है । वीर युवकों ! बढ़े चलो ! ईश्वर के प्रति आस्था रखो । दुखियों का दर्द समझो और ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करो । वह अवश्य मिलेगी ।

तुम लोग ईश्वर की संतान हो, अमर आनंद के भागी हो, पवित्र और पूर्ण आत्मा हो। अतएव तुम कैसे अपने को जबरदस्ती दुर्बल कहते हो ? उठो, साहसी बनो, वीर्यवान होओ। सब उत्तरदायित्व अपने कंधे पर लो– यह याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो । तुम जो कुछ बल या सहायता चाहो, सब तुम्हारे ही भीतर विद्यमान है।

एक बात पर विचार करके देखिए, मनुष्य नियमों को बनाता है या नियम मनुष्य को बनाते हैं ? मनुष्य रूपया पैदा करता है या रूपया मनुष्य को पैदा करता है ? मनुष्य कीर्ति और नाम पैदा करता है या कीर्ति और नाम मनुष्य पैदा करते हैं ? मेरे मित्रों, पहले मनुष्य बनिए, तब आप देखेंगे कि वे

सब बाकी चीजें स्वयं आपका अनुसरण करेंगी । परस्पर के घृणित द्वेषभाव को छोड़िए और सदुद्देश्य, सदुपाय एवं सत्साहस का अवलम्बन कीजिए। आपने मनुष्य जाति में जन्म लिया है, तो अपनी कीर्ति यहीं छोड़ जाइए ।

हमें केवल मनुष्यों की आवश्यकता है, और सब कुछ हो जायेगा, किन्तु आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, श्रद्धासम्पन्न और अन्त तक कपटरहित नवयुवकों की। इस प्रकार के सौ नवयुवकों से संसार के सभी भाव बदल दिये जा सकते हैं और सब चीजों की अपेक्षा इच्छाशक्ति का अधिक प्रभाव है। इच्छाशक्ति के सामने और सब शक्तियाँ दब जायेंगी, क्योंकि इच्छाशक्ति साक्षात् ईश्वर से निकलकर आती है। विशुद्ध और दृढ़ इच्छाशक्ति सर्वशक्तिमान है ।

मैंने तो नवयुवकों का संगठन करने के लिए जन्म लिया है । यहीं क्या, प्रत्येक नगर में, सड़कों पर और जो मेरे साथ सम्मिलित होने को तैयार है, मैं चाहता हूँ कि इन्हें अप्रतिहत गतिशील तरंगों की भाँति भारत में सब ओर भेजूँ, जो दीन–हीनों एवं पददलितों के पर–सुख, नैतिकता, धर्म एवं शिक्षा उड़ेल दें और इसे मैं करूँगा ।

मैं सुधार में विश्वास नहीं करता , मैं विश्वास करता हूँ स्वाभाविक उन्नति में। मैं अपने को ईश्वर के स्थान पर प्रतिष्ठित कर अपने समाज के लोगों के सिर पर यह उपदेश ''तुम्हें इस भाँति चलना होगा, दूसरे प्रकार नहीं'' मढ़ने का साहस नहीं कर सकता । मैं तो सिर्फ उस गिलहरी की भाँति होना चाहता हूँ जो श्री रामचंद्र जी के पुल बनाने के समय थोड़ा बालू देकर अपना भाग पूरा कर संतुष्ट हो गयी थी । यही मेरा भी भाव है ।

लोग स्वदेश–भक्ति की चर्चा करते हैं । मैं स्वदेश–भक्ति में विश्वास करता हूँ। पर स्वदेश–भक्ति के सम्बन्ध में मेरा एक आदर्श है । बड़े काम करने के लिए तीनों चीजों की आवश्यकता होती है । बुद्धि और विचार शक्ति हम लोगों की थोड़ी सहायता कर सकती है । वह हमको थोड़ी दूर अग्रसर करा देती है और वहीं ठहर जाती है । किंतु हृदय के द्वारा ही महाशक्ति की प्रेरणा होती है, प्रेम असंभव को संभव कर देता है । जगत् के सब रहस्यों का द्वार प्रेम ही है ।

अतः मेरे भावी संस्कार को, मेरे भावी देशभक्तों, तुम हृदयवान बनो । क्या तुम हृदय से समझते हो कि देव और ऋषियों की करोड़ों संतान पशुतुल्य हो गयी हैं ? क्या हृदय में अनुभव करते हो कि करोड़ों आदमी आज भूखे मर रहे हैं और वे कई शताब्दियों से इस भाँति भूखों मरते आ रहे हैं? क्या तुम समझते हो कि अज्ञात के काले बादल ने सारे भारत को आच्छन्न कर लिया है ? क्या तुम यह सब समझकर कभी अस्थिर हुए हो ?

क्या तुम कभी इससे अनिंद्रित हुए हो ? क्या वह तुम्हारे हृदय के स्पन्दन से कभी मिली है ? क्या उसने कभी तुम्हें पागल बनाया है ? क्या कभी तुम्हें निर्धनता और नाश का ध्यान आया है ? क्या तुम अपने नाम, यश, सम्पत्ति यहाँ तक कि अपने शरीर को भी भूल गये हो ? क्या तुम ऐसे हो गये हो ? यदि हो, तो जानो कि तुमने स्वदेश भक्ति की प्रथम सीढ़ी पर पैर रखा है ।

उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ । अपने मनुष्य जन्म को सफल करो । **''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत''**– उठो, जागो और तब तक रूको नहीं, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय ।

जो अपने आप में विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है । प्राचीन धर्मों ने कहा है, वह नास्तिक है जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता । नया धर्म कहता है, वह नास्तिक है जो अपने आप में विश्वास नहीं करता ।

यह एक बड़ी सच्चाई है, शक्ति ही जीवन और कमजोरी ही मृत्यु है। शक्ति परम सुख है, जीवन अजर–अमर है, कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु है।

सबसे पहले हमारे तरूणों को मजबूत बनना चाहिए । धर्म इसके बाद की वस्तु है। मेरे तरूण मित्रो शक्तिशाली बनो, मेरी तुम्हें यही सलाह है । तुम गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबाल खेल के द्वारा ही स्वर्ग के अधिक समीप पहुँच सकोगे । ये कुछ कड़े शब्द हैं, पर मैं उन्हें कहना चाहता हूँ, क्योंकि तुम्हें प्यार करता हूँ । मैं जानता हूँ कि काँटा कहाँ चुभता है ? मुझे इसका कुछ अनुभव है । तुम्हारे स्नायु और मांसपेशियाँ अधिक मजबूत होने पर तुम गीता अधिक अच्छी तरह समझ सकोगे । तुम, अपने शरीर में शक्तिशाली रक्त प्रवाहित होने पर, श्रीकृष्ण के तेजस्वी गुणों और उनकी अपार शक्ति को अधिक समझ सकोगे । जब तुम्हारा शरीर मजबूती से तुम्हारे पैरों पर खड़ा रहेगा और तुम अपने को ''मनुष्य'' अनुभव करोगे, तब तुम उपनिषद् और आत्मा की महानता को अधिक अच्छा समझ सकोगे ।

मैं अब तक के धर्मों को स्वीकार करता हूँ और उन सबकी पूजा करता हूँ। मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ईश्वर की उपासना करता हूँ , वे स्वयं चाहे किसी भी रूप में उपासना करते हों । मैं मुसलमानों की मस्जिद में जाऊँगा, मैं ईसाइयों के गिरिजा में क्रास के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करूँगा, मैं बौद्ध–मंदिरों में जाकर बौद्ध और उनकी शिक्षा की शरण लूँगा । मैं जंगल में जाकर हिन्दुओं के साथ ध्यान करूँगा, जो हृदयस्थ ज्योतिस्वरूप परमात्मा को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं ।

शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूँस दिया गया है और जो आत्मसात हुए बिना वहाँ आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता है । हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है, जो जीवन–निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हों । यदि आप केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं, तो आप पूरे संग्रहालय को कंठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं ।

अपने भाइयों का नेतृत्व करने का नहीं, वरन् उनकी सेवा करने का प्रयत्न करो। नेता बनने की इस क्रूर उन्मत्तता ने बड़े–बड़े जहाजों को इस जीवनरूपी समुद्र में डुबो दिया है।

मैं तुम सबसे यही चाहता हूँ कि तुम आत्म–प्रतिष्ठा, दलबंदी और ईर्ष्या को सदा के लिए छोड़ दो। तुम्हें पृथ्वी–माता की तरह सहनशील होना चाहिए । यदि तुम ये गुण प्राप्त कर सको, तो संसार तुम्हारे पैरों पर लौटेगा ।

शब्दार्थ

पुनरुत्थान – फिर से उठना	घृणित – घृणा उत्पन्न करने योग्य
सदुपाय – अच्छा उपाय	मढ़ने – दूसरों पर आरोपित करना
आच्छन्न – ढ़का हुआ	उन्मत्तता – पागल पन

अभ्यासार्थ–प्रश्न

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. शिकागो विश्वधर्म महासभा में स्वामीजी ने कब व्याख्यान दिया था ।

   क. 1893 ई   ख. 1897 ई

   ग. 1889 ई   घ. 1901 ई

2. विवेकानन्द के गुरु का नाम क्या था ?

   (क) रामानन्द   (ख) शंकराचार्य

   (ग) राम कृष्ण परमहंस   (घ) नरेन्द्र नाथ

अतिलघूत्तरात्मक–प्रश्न

3. विवेकानन्द की दृष्टि में भारत के पुनरूत्थान का सर्वश्रेष्ठ आधार क्या हो सकता है?
4. विवेकानन्द व्यक्ति के लिए शक्ति प्राप्त करने का सुलभ स्रोत क्या मानते हैं ?

लघूत्तरात्मक–प्रश्न

5. ''मैं तो सिर्फ उस गिलहरी की भाँति होना चाहता हूँ जो श्री रामचन्द्र जी के पुल बनाने के समय थोड़ा बालू देकर अपना भाग पूरा कर संतुष्ट हो गयी थी । यही मेरा भी भाव है ।'' इस पंक्ति से विवेकानन्द क्या स्पष्ट करना चाहते हैं ?
6. स्वदेश भक्ति से सामान्य अर्थ क्या लिया जाता है ? विवेकानन्द के विचार इससे किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए ।
7. विवेकानन्द तरूणों को शारीरिक दृष्टि से अधिक शक्तिशाली बनने को प्राथमिकता देते हैं । इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं ?
8. धर्म के बारे में आप विवेकानन्द को उदार दृष्टिकोण वाला मानते हैं या संकीर्ण ? युक्तियुक्त उत्तर दीजिए ।
9. निम्नांकित शब्दों का विग्रह करते हुए समास बताइए–

   पददलित, इच्छाशक्ति, दीन–हीन, पृथ्वीमाता, परहित, श्रद्धासम्पन्न, अजर–अमर

निबन्धात्मक–प्रश्न

10. आज की शिक्षा में आप क्या कमियाँ अनुभव करते हैं ? उनमें सुधार लाने के लिए आप विवेकानन्द के विचारों से क्या सहायता लेना चाहेंगे ?

11. निम्नाकिंत की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) बुद्धि और विचार शक्ति हम लोगों की थोड़ी सहायता कर सकते हैं। वह हमको थोड़ी दूर अग्रसर करा देती है और वहीं ठहर जाती है किन्तु हृदय के द्वारा ही महाशक्ति की प्रेरणा होती है । प्रेम असंभव को संभव कर देता है ।

(ख) यह एक बड़ी सच्चाई है, शक्ति ही जीवन है और कमजोरी मृत्यु है। शक्ति परमसुख है, जीवन अजर–अमर है, कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. क
2. ग

•••